छत्तीसगढ़ का इतिहास

कल्चुरी राजवंश / चेदिवंशीय / हैह्यवंशीय (550ई. से 1741 ई.)

- **वंशावली :–**
  1. कृष्णराज (550 ई. – 575 ई.)
  2. शंकरगण (575 ई. – 600 ई.)
  3. बुद्धराज (600 ई. – 620 ई.)
  4. वामराज / वोपदेव
  5. शंकरगण–I
  6. लक्ष्मणराज –I
  7. कोकल्य –I
  8. शंकरगढ़ –II उपाधि – मुग्धतुंग / रणविग्रह (इनका युद्ध विक्रमादित्य से हुआ)
  9. बालहर्ष
  10. युवराज –I
  11. लक्ष्मणराज –II
  12. युवराज –II
  13. कोकल्यदेव –II

➢ **कृष्णराज –**

- इन्हें कल्चुरी वंश का आदिपुरूष कहा जाता था।
- इनकी उपाधि–परमेश्वर / परमभट्टारक थी।
- इस वंश में सर्वप्रथम सिक्के प्रचलित करने का श्रेय इन्हीं को जाता है।

- **कलचुरियों की राजधानी :–**

छत्तीसगढ़ के कलचुरि (1000ई से 1741 से 1745 से 1756ई.)		
1.	कलिंगराज	1000–1020 ई.
2.	कमलराज	1020–1045 ई.
3.	रत्नदेव –I	1045– 1065 ई.
4.	पृथ्वीदेव–I	1065–1090 ई.
5.	जाजल्यदेव –I	1090–1120 ई.
6.	रत्नदेव –II	1120–1135 ई.
7.	पृथ्वीदेव –II	1135– 1165 ई.
8.	जाजल्यदेव –II	1165–1168 ई.
9.	जगदेव	1168–1178 ई.
10.	रत्नदेव –III	1178–1198 ई.
11.	प्रतापमल	1198–1225 ई.
12.	बाहरेन्द्रसाय	15वी शताब्दी
13.	कल्याणसाय	
14.	लक्ष्मणदेव	
15.	तखतसिंह	17 वीं शताब्दी
16.	राजसिंह	1686–1712 ई.
17.	सरदार सिंह	1712–1732 ई
18.	रघुनाथ सिंह	1732–1741–1745 ई.
19.	मोहनसिंह	1745 –1757 ई.

➢ कलिंगराज (1000 से 1020ई.)

- छत्तीसगढ़ में कलचुरि वंश का वास्तविक संस्थापक था।
- राजधानी–तुम्माण (कोरबा)
  ↓
  (गोलाकार पत्थरों से घीरा हुआ 30 गांवों का समूह)
- इन्होनें चैतुरगढ़ में महिषासुर मर्दनी मंदिर का निर्माण करवाया।
- इसी समय अलबरूनी भारत की यात्रा पर आये और उन्होनें अपनी रचना तहकीक–ए–हिन्द में कलिंगराज का वर्णन किया है।
- पृथ्वीदेव–I के अमोदा ताम्रपत्र में इनका वर्णन है।

➢ कमलराज (1020 से 1045ई.)

- कमलराज एक महत्वकांक्षी शासक था।
- त्रिपुरी के राजा गांगेयदेव उड़ीसा विजयअभियान को जाते समय कमलराज को साथ ले गये और विजय हुये।
- कमलराज ने उड़ीसा से साहिल नामक ब्राम्हण को साथ लेकर आये और उन्हे अपना सेनापति नियुक्ति किया।

➢ रत्नदेव–I (1045 से 1065ई.)

- रतनपुर नगर बसाया
- इन्होने अपनी राजधानी तुम्माण से हटाकर रतनपुर (1050 ई.) को बनाया।
- रतनपुर में तुम्माण से कही बढ़कर **विनित्र रत्नखचिम नानादेवकुल भूषित शिवमंदिर** बनवाया।
- रतनपुर में महामाया मंदिर का निर्माण करवाया।
- रतनपुर में अनेको तालाब, कुआं खुदवाकर उनको तालाबों का नगर बनाया।
- रतनपुर को तालाबों व टंकियों का नगर कहा जाता है।

- इनके काल में रतनपुर को कुबेरपुर की संज्ञा दी गयी।
- चैतुरगढ़ के महिषासुरमर्दिनी मंदिर का निर्माण कार्य पूर्ण कराया।
- रत्नदेव–I का विवाह वर्जू वर्मा की पुत्री नोनल्ला से हुआ।
- रत्नदेव–I का उल्लेख **बिलहरी अभिलेख** में हुआ है।
- तुम्माण में बंकेश्वर महादेव मंदिर बनवाया।
- रतनपुर को चतुर्यगीयपुरीय भी कहा गया।
- **रतनपुर का नाम** –
  - ✓ सतयुग – मणिपुर
  - ✓ त्रेतायुग – मणिकपुर
  - ✓ द्वापरयुग – हीरापुर
  - ✓ कलयुग – रतनपुर

➢ पृथ्वीदेव–I (1065 से 1090ई.)

- पृथ्वीदेव–**I** के तीन ताम्रपत्र प्राप्त हुए है।
  1. **अमोदा** – (अपने आपको 21 गांव का स्वामी, हैहयवंशीय, कलिंगराज, का वर्णन
  2. **लाफा**
  3. **रायपुर**
- रतनपुर में विशाल सरोवर का निर्माण करवाया।
- तुम्माण में पृथ्वीदेवश्वर (शिवमंदिर) मंदिर का निर्माण करवाया।
- तुम्माण में वकेश्वर मंदिर में चतुष्किका (चार खंभे) बनवाये।
- इन्होने सकलकोसलाधिपति की उपाधि धारण की।
- पृथ्वीदेव –I की पत्नी का राजल्ला था। विग्रहराज और सोढ़देव दो मंत्रियों का पता उत्कीर्ण लेखों से प्राप्त होता है।

➢ जाजल्यदेव–I (1090 से 1120ई.)

- कलचुरी वंश का सबसे योग्य व प्रतापी शासक हुआ।
- जाजल्यदेव–I ने बस्तर के छिंदक नागवंशी राजा सोमेश्वर को दण्ड देने के उद्देश्य से उसकी राजधानी को जला दिया तथा उसके मंत्रियों तथा रानियों को कैद कर लिया, (एक लाख गांवों का स्वामी बताने के कारण) किन्तु उसकी माता के अनुरोध पर मुक्त कर दिया।
- जाजल्यपुर (जांजगीर) नगर बसाया।
- जांजगीर के नक्टा (विष्णु) मंदिर का निर्माण करवाया।
  - ↓
  - ✓ विष्णु के 24 अवतार का वर्णन
  - ✓ अधूरा मंदिर निर्माण है।
- पाली के शिवमंदिर का जीर्णोद्धार करवाया।
- सोने व चांदी के सिक्के चलाये।
- सिक्के में गजशार्दूल श्रीमज्जाजल्यदेव लिखवाया।
- स्वर्ण सिक्के चलाने वाला पहला कलचुरि शासक।
- गजर्शादूल की उपाधि धारण की।
- इनकी पत्नी का नाम लाच्छला देवी था।
- **इनके गुरू** – रूद्रशिव
- संधिविग्राहिक – विग्रहराज
- मंत्रि – पुरूषोत्तम
- विजय अभियान – बैरागढ़
  - ✓ लंजिका (लांजी)
  - ✓ भाणार (भंडारा)
  - ✓ तलहरि
  - ✓ दंडकपुर (बंगाल स्थित मिदनापुर)
  - ✓ किमिडी गंजाम जिला आंध्राप्रदेश
- ऐसा माना जता है की जाजल्यदेव, मकरध्वज जोगी के साथ तीर्थायन को गए तथा वापस लौटकर नही आए।

➢ रत्नदेव–II (1120 से 1135ई.)

- रत्नदेव –II ने ओड़िशा के राजा अनन्तवर्मा चोडगंग को पराजित किया। इन्होने त्रिकलिंगाधिपति की उपाधि धारण की।
- रत्नदेव –II के शासनकाल में त्रिपुरी के राजा गयाकर्ण का आक्रमण हुआ जिसमें रत्नदेव–II विजय रहे।
- इन्होने साम्राज्य का विस्तार किया।
- सोने व चांदी के सिक्के चलाये।
- रत्नदेव को 36 विधाओं का ज्ञाता तथा यृद्ध में रूचि रखने वाला कहा गया।
- **अभिलेख** –
  - ✓ अलकलरा
  - ✓ खरौद
  - ✓ शिवरीनारायण
  - ✓ पारागांव
  - ✓ सरखों
- रत्नदेव के कार्यकाल में विद्वानों और कलाकारों को उदार आश्रय मिलता था।
- पृथ्वीदेव –II के राजिम शिलालेख से ज्ञात होता है कि तलहरि मण्डल में महान कार्य करने के कारण रत्नदेव – ने जगतसिंह का नाम प्राप्त कर लिया था।
- सामंत वल्लभराज के अकलतरा अभिलेख से ज्ञात होता है कि रत्नदेव ने गोड़ राजा शशांक व भंज राजा हखोदु पर आक्रमण कर उन्हे भी पराजित कर दिया।

➢ पृथ्वीदेव–II (1135 से 1165ई.)

- अपने वंश का सर्वाधिक प्रतापी व महत्वकांक्षी राजा था।
- ओड़िसा के राजा अनंतवर्मन चोडगंग को पराजित किया।
- अपने वंश में सर्वाधिक राज्य को विस्तृत करने वाला राजा हुआ।
- इन्होनें सोने व चांदी के सिक्के चलाये।
- चांदी के सबसे छोटे सिक्के चलाये।
- राजिम शिलालेख के अनुसार पृथ्वीदेव–II के सेनापति जगतपाल ने राजीवलोचन मंदिर का जीर्णोद्धार करवाया। साथ–ही–साथ वह के रामचन्द्र मंदिर का निर्माण कराया।
- इनके सामंत वल्लभराज ने जगदलपुर में वल्लभसागर झील बनवाया।
- कलचुरियों में सर्वाधिक अभिलेख इसी राजा के प्राप्त हुए है जैसे – कोटागढ़, राजिम, बिलाईगढ़, कोनी, अमोदा, रतनपुर, परागांव, घोटिया, आदि 14 स्थानों से इसके बड़े अभिलेख प्राप्त हुए हैं।
- इनके सामंत ब्रम्हादेव ने सम्बलपुर जिलें में नरसिंहनाथ तथा नारायणपुर में धुर्जटी मंदिर का निर्माण करवाया।
- इनके भाई अकालदेव ने अकलतरा शहर बसाया था।
- राजिम शिलालेख से प्राप्त होता है कि इनके सेनापति जगतपाल ने सरहागढ़, मचका, सिहावा, भ्रमरवद्र, कान्तार, कुसुमभोग, कान्दाडोंगर तथा काकरय के क्षेत्र को जीतकर साम्राज्य का विस्तार किया।
- इनके सामंत वल्लभराज, घुड़सवारी एवं हाथियों को कैद करने की कला में निपुण था, उसने रतनपुर में दो सरोवरों (जिसमें से एक रत्नदेव सरोवर तथा खारूंग) नाम से झील का निर्माण कराया था। खारंग नदी पर निर्मित खूटाघाट बांध इसी झील का विस्तार है।

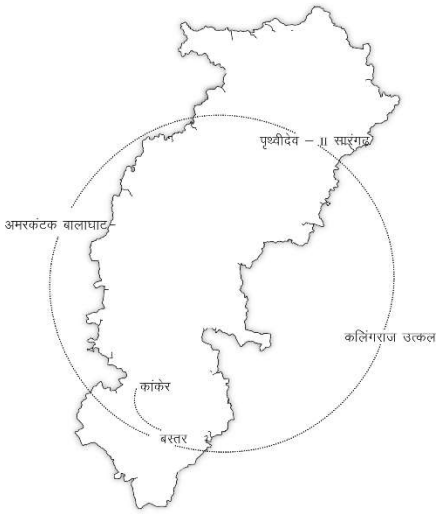

पृथ्वीदेव –II
↓ पुत्र ई

जगदेव	जाजल्यदेव–II
(1168-1178 ई.)	(1165- 1168 ई.)

➢ जाजल्यदेव–II (1165 से 1168ई.)

- जाजल्यदेव–II के कार्यकाल मे त्रिपुरी के कलचुरी राजा जयसिंह का आक्रमण हुआ और जाजल्यदेव–II विजय हुये इसका वर्णन शिवरीनाराण अभिलेख से पता चलता है।
- शिवरीनारायण में चन्द्रचूर्ण मंदिर का निर्माण करवाया।
- ये निःसंतान थे।
- जाजल्यदेव – II को एक ग्राह ने पकड़ लिया था। ऐसा लगता था की यह ग्राह बिना प्राण लिए छोड़ेगा नही परन्तु देवी कृपा से ग्राह ने उसे छोड़ दिया और उसके प्राण बच गए।
- इन्होनें अनेक देवालयों व सरोवरों का निर्माण कराया।

➢ जगदेव–II (1168 से 1178ई.)

- इनकी पत्नी का नाम सोमल्ला था।
- रत्नदेव–III के खरौद शिलालेख में जगदेव व सोमल्ला का वर्णन है।

➢ रत्नदेव–III (1178 से 1198ई.)

- रत्नदेव–III के समय रतनपुर क्षेत्र में आर्थिक रूप से गरीबी फैल गयी थी।
- रत्नदेव–III ने ओड़िसा के ब्रम्हण गंगाधर को लाया और उन्हे यहां का सेनापति/प्रधानमंत्री नियुक्त किया।
- इनके राज्य पुनः समृद्धि हुआ।
- सेनापति गंगाधर ने खरौद के लक्ष्मणेश्वर मंदिर का जीर्णोद्धार कराया।
- खरौद में तपस्वीयों के लिए मठ बनवाया।
- रतनपुर में एक वीरा मंदिर का निर्माण कराया।
- पुरारति शिव मंदिर का निर्माण करवाया।

➢ प्रतापमल्य (1198 से 1225ई.)

- प्रतापमल्य ने तांबे के चकराकार व षटकोणाकार सिक्के चलाये। जिसमें **सिंह** और **कटार** की आकृति मिलती है।
- इसी काल में जसराज अथवा यशोराज नामक एक कलचुरियों का सामंत हुआ इसका उल्लेख बोरिया मूर्तिलेख तथा सहसपुर के सहस्त्रबाहु प्रतिमा लेख में मिलता है।
- **इनके तीन ताम्रपत्र –**
  - ✓ पेन्ड्राबंध
  - ✓ कोनारी
  - ✓ बिलाईगढ़
- इनके 12 ताम्रसिक्के बालपुर से प्राप्त हुए है।
- प्रतापमल्ल के बाद 1494 ई. तक अर्थात लगभग 300 वर्षो तक कलचुरी वंश से संबंधित कोई भी जानकारी प्राप्त नहीं हुई इसलिए इस समय को कलचुरी इतिहास का अंधकार युग कहा जाता है।

➢ बाहरेनद्रसाय (1480 से 1544ई.)

- छुरी कोसगई को राजधानी बनवाया।
- बाहरेनद्रसाय का एक शिलालेख रतनपुर तथा दो शिलालेख कोसंग से प्राप्त हुई है।
  1. रतनपुर
  2. छुरीकोसगई (पठानों के द्वारा आक्रमण होने से रक्षा करने का वर्णन मिलता है)
- राजा बाहरेन्द्रसाय ने बिसई ठाकुर विक्षेवार को सैनिक कार्य के बदले सोनाखान क्षेत्र की जमींदारी दे दी। जो शहीद वीर नारायणसिंह के पूर्वज थे।
- कोसगई माता का मंदिर बनवाया।
- छूरी में कोषागार का निर्माण करवाया।
- रतनपुर के महामाया मंदिर के सभागृह का जीर्णाद्धार कराया था।

➢ कल्याणसाय (15वीं शताब्दी)

- मुगल दरबार में 8 वर्ष तक रहे।

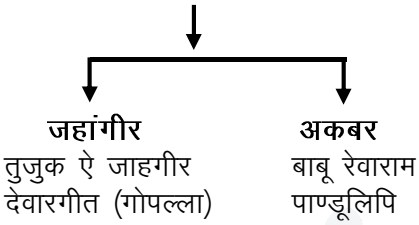

- मड़ला के राजा के साथ विवाद होने के कारण मुगल दरबार में गये थे, तथा अपने साथ 1 लाख रूपये, 80 हाथी, भेंट स्वरूप लेकर गये थे साथ में 4 लोगों को अपने साथ लेकर अकबर के दरबार में गये थे।
- कल्याणसाय ने वापस आकर भू–राजस्व जमाबंदी की शुक्रआत की। इसी समय 36 गढ़ अलग–अलग गढ़ होन का वर्णन है।
- रतनपुर के जगन्नाथ मंदिर का निर्माण कराया।
- इस समय रतनपुर राज्य की वार्षिक आय लगभग 6.50 लाख रूपये थी। अंग्रेजों ने इन्ही की पुस्तक का प्रयोग किया है।
- **तुजुक–ए–जहांगीर में वर्णन** – 25 वां खुरदाद मेरा भाग्यशाली पुत्र वरवेज इलाहाबाद से आया। उसने कल्याणसाय को पेश किया जो रतनपुर का जमींदार है। इसके विरूद्ध मेरे पुत्र ने सेना भेजी थी और उसने नजराने के तौर पर 8 हाथी व 1 लाख रूपये भेट किये थे।
- कल्याण साय ने एक राजस्व पुस्तिका तैयार की थी, इस जमाबदी प्रणाली में उस समय की प्रशासनिक व्यवस्था, राजस्व एवं सैन्यबल की जानकारी मिलती है जो की अकबर के पूर्व की विकसित राजस्व व्यवस्था है।
- कल्याणसाय की इस राजस्व पुस्तिका को आधार बनाकर बिलासपुर के प्रथम बंदोबस्त अधिकारी **मि. चिरम ने 1868** में रतनपुर और रायपुर को **18–18 गढ़ों** में बांटा था।

➢ तखतसिंह (17वीं शताब्दी)

- तखतपुर शहर की स्थापना की।
- औरंगजेब के समकालीन शासक था।
- तखतपुर में शिवमंदिर का निर्माण करवाया और वहां एक शिलालेख लिखवाया।

➢ राजसिंह (1689 से 1712ई.)

- इन्होनें राजपुर (जूना) रतनपुर के निकट शहर की स्थापना की।
- राजसिंह भी औरंगजेब के समकालीन शासक था।
- राजसिंह के दरबार में कवि गोपालमिश्र थे। जिन्होनें अपनी रचना खुबतमाशा में छत्तीसगढ़ शब्द का प्रयोग किया। (द्वितीय प्रयोगकर्ता)
- **नोटः**– खैरागढ़ के राजा लक्ष्मणनिधि के चारणकवि दलपतराय ने छत्तीसगढ़ का सर्वप्रथम प्रयोग किया था।
- राज सिंह ने जूनाशहर में ही बादलमहल/हवामहल का निर्माण कराया
  (बादलमहल 7 मंजिला इमारत बनवाया जो अब सिर्फ 2 मंजिल शेष बचे है।)
- राजसिंह ने मोहनसिंह को शासन सौपने का वादा किया। किन्तु राजसिंह के मृत्यु के समय मोहनसिंह शिकार पर जाने के कारण राहसिंह के चाचा सरदार सिंह शासक बने।

➢ सरदार सिंह (1712 से 1732ई.)

- सरदार सिंह निःसंतान होन के कारण इन्होनें अपने भाई रघुनाथ सिंह को राजा बनाया।

➢ रघुनाथ सिंह (1732 से 1741 से 1745ई.)

- रघुनाथ सिंह के समय 17 वीं. ई. में पहली बार मराठा सेनापति भास्करपंत का आक्रमण हुआ।
- रघुनाथ सिंह ने अधीनता स्वीकार की।
- भास्कारपंत ने मराठा की कल्याणगिरि गोसाई को प्रतिनिधि बनाकर बंगाल विजय अभियान को चले गये।
- रघुनाथ सिंह व कल्याण गिरि गोसाई की आपस में बनती नहीं थी इसलिए रघुनाथ सिंह ने कल्याण गिरि गोसाई को जेल में बंद कर दिया।
- गिरि गोसाई को जेल में बंद करने के कारण 1745 ई. में पुनः भास्करपंत ने द्वितीय आक्रमण किया।
- रघुनाथ सिंह पुनः पराजित हुआ।
- इस वंश का अंतिम शासक था।
- मोहन सिंह को मराठाओं ने गद्दी पर बैठाया। भास्कार पंत का आक्रमण हुआ।
- **नोट** :– मराठो के अधीन राज्य करने वाले पहले कलचुरि राजा रघुनाथ सिंह थे।

➢ मोहन सिंह (1745 से 1757ई.)

- मोहनसिंह मराठों के अधीन राज्य करने वाले अंतिम शासक हुए।

कल्चुरी कालीन विशेष

- **कलचुरि कालीन राजधानी** :–

क्र.	शासक का नाम	राजधानी	जिला
1.	कलिंगराज	तुम्माण	कोरबा
2.	रत्नदेव–I	रतनपुर	बिलासपुर
3.	बारेन्द्रसाय	छुरीकोसगई	कोरबा

- **कल्चुरी कालीन सिक्के** :–
  1. **स्वर्ण सिक्के** :–
     - ✓ जाजल्य देव
     - ✓ रतनदेव–II
     - ✓ पृथ्वीदेव–II
  2. **चांदी के सिक्के** :–
     - ✓ पृथ्वीदेव-II चांद के सबसे छोटे सिक्के।
  3. **विशेष सिक्के** :–
     - ✓ प्रतापमल्ल – तांबे के षटकोणाकार व चकराकार सिक्के।

- **कल्चुरिकालिन मंदिरों का जीर्णोद्धार**

क्र	मंदिर के नाम	जीर्णोद्धार	निर्माण
1	पाली का शिव मंदिर	जाजल्यदेव –I	विक्रमदित्य (बाणवंश)
2	राजिम लोचन मंदिर	पृथ्वीदेव–II (जगतपाल)	विलासतुंग (नलनागवंश)
3	खरौद का लक्ष्मणेश्वर मंदिर	रत्नदेव–II (गंगाधर)	ईशानदेव

- **कल्चुरिकालिन उपाधियां**

क्र	शासक	उपाधि
1	पृथ्वीदेव –I	सकलकोसलाधिपति
2	जाजल्यदेव –I	गजशादुर्ल
3	रत्नदेव –II	त्रिकलिंगाधिपति

क्र.	शासक का नाम	अभिलेख	मंदिर निर्माण	स्थान
1.	**कलिंगराज**	पृथ्वीदेव के अमोदा ताम्रपत्र तहकी ए हिन्द अलबरूनी द्वारा वर्णन	महिषासुर मर्दिनी	चैतरगढ़ / लाफागढ़
2.	**रत्नदेव–I**	बिलहरी अभिलेख में वर्णन	महामाया मंदिर बकेश्वर मंदिर	रतनपुर तुम्माण
3.	**पृथ्वीदेव–I**	**ताम्रपत्र :–** • अमोदा • लाफा • रायपुर	पृथ्वीदेवश्वर मंदिर वकेश्वर मंदिर में चतुष्किा	तुम्माण तुम्माण
4.	**जाजल्यदेव**		नक्टा (विष्णु) मंदिर	जांजगीर
5.	**रत्नदेव–II**	**ताम्रपत्र :–** • अकलतरा • शिवरीनारायण • खरौद		
6.	**पृथ्वीदेव–II**	14 ताम्रपत्र प्राप्त हुए (सर्वाधिक अमोदा से)	रामचन्द्र मंदिर (जगतपाल)	राजिम
7.	**जाजल्यदेव–II**	शिवरीनारायण शिलालेख	चन्द्रचुर्ण	शिवरीनारायण
8.	**रत्नदेव–III**	शिवरीनारायण अभिलेख	एकवीरा मंदिर तपस्यों के लिए मठ पुरातित शिव मंदिर	रतनपुर खरौद रतनपुर
9.	**प्रतापमल्ल**	**ताम्रपत्र :–** • बिलाईगढ़ • पेन्ड्रा • कोनारी		
10.	**बाहरेन्द्रसाय**		कोसगई माता मंदिर	छुरी कोसगई
11.	**कल्याणसाय**		जगन्नाथ मंदिर	रतनपुर
12.	**तखतसिंह**	तखतपुर शिलालेख	शिवमंदिर	तखतपुर
13.	**राजसिंह**		बादलमहल (मंदिर नहीं है)	राजपुर / जुना रतनपुर

रायपुर के कलचुरी वंश

- कलचुरी शासन व्यवस्था के अंधकार युग के दौरान इस परिवार में बटवारा हुआ।
- अंधकार युग – (1225ई. से 15वीं शताब्दी)
- राजधानी – खल्लारी / रायपुर
- शिवनाथ नदी के उत्तर के 18 गढ़ को रतनपुर के कल्चुरी को दिया गया और दक्षिण के 18 गढ़ रायपुर के कल्चुरी को दिया गया।
- इस वंश में कुल 18 राजा हुए।
- **संस्थापक** –
  - ✓ केशवदेव
  - ✓ लक्ष्मीदेव
  - ✓ रामचन्द्र देव

- **वंशावली –**
  - ✓ केशवदेव
  - ✓ लक्ष्मीदेव
  - ✓ सिंघणदेव
  - ✓ रामचन्द्रदेव
  - ✓ ब्रम्हदेव
  - ✓ अमरसिंह

➢ लक्ष्मीदेव

- ब्रम्हदेव के शिलालेख से प्रकट होता है कि 14 वीं सदी के मध्य में रतनपुर के राजा का रिश्तेदार लक्ष्मीदेव प्रतिनिधि के रूप में खल्लारी भेजा गया था।

➢ सिंघणदेव

- ब्रम्हदेव के शिलालेख द्वारा 18 गढ़ो को जीतने का वर्णन है।

➢ रामचन्द्रदेव

- रायपुर नगर बसाया
- रामचन्द्रदेव का नाम रायपुर शिलालेख में रामचन्द्र एवं खल्लारी शिलालेख में रामदेव उल्लेखित हैं।
- इन्होने रायपुर का नामकरण अपने पुत्र **ब्रम्हदेवराय** के नाम पर रखा।
- खल्लारी शिलालेख के अनुसार रामचन्द्र द्वारा नागवंश के राजा भाणिंगदेव को पराजित किए जाने का विवरण भी मिलता है।

➢ ब्रम्हदेव

- रायपुर को राधानी बनाया
- ब्रम्हदेव ने 1409 ई. में अपनी राजधानी खल्लारी से रायपुर स्थानान्तरित किया था।
- खल्लारी शिलालेख से ज्ञात होता है कि देवपाल नामक मोची ने खल्लारी में नारायण मंदिर का निर्माण 14 –15 वी. ई में किया था।
- इन्होनें रायपुर में बूढ़ातालाब और दूधाधारी मठ का निर्माण करवाया था।
- रायपुर शिलालेख से ज्ञात होता है कि हाजिराज नामक व्यक्ति ने रायपुर के खारून नदी तट पर हटकेश्वर महादेव मंदिर का निर्माण करवाया।
- **इनके दो शिलालेख प्राप्त हुए है :–**
  - ✓ रायपुर शिलालेख – हटकेश्वर मंदिर से प्राप्त हुआ है।
  - ✓ खल्लारी शिलालेख – नारायण मंदिर से प्राप्त हुआ है।

➢ अमनसिंह

- अमरसिंह का एक ताम्रपत्र (विक्रमसंवत 1792 अर्थात् 1735 ई.) को प्राप्त हुआ।
- अमरसिंह देव को 1750 ई. में मराठों से बिना किसी विरोध के राज्यच्चुत कर दिया और गद्दी छीन ली।
- अमरसिंह का रायपुर, राजिम व पाटन के परगनें देकर 7000 रू. वार्षिक टकोली, निश्चित कर दी।
- अमरसिंह के मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र शिवराजसिंह उत्तराधिकारी बना, किन्तु भोंसलों ने उससे उत्तराधिकारी से प्राप्त जागीरें भी छीन ली।
- बिंबाजी ने शिवराजसिंह को महासमुंद तहसील के अन्तर्गत बड़गांव एवं अन्य चार कर मुक्त ग्राम प्रदान किये। रायपुर परगने के प्रत्येक गांव से 1–1 रू वसूल करने का अधिकार भी दिया।

नोट :– इस प्रकार कल्चुरी वंश ने 750 वर्षों के लम्बे समय तक शासन करने के पश्चात कल्चुरी राजवंश समाप्त होने के साथ छत्तीसगढ़ के इतिहास से हैहयवंशियों का नाम बड़े ही चमत्कारिक ढंग से समाप्त हो गया।

- ✓ ताम्रपत्र व शिलालेख में **ओम नमः शिवाय** से शुरूआत करते है।
- ✓ कुलदेवी – राजलक्ष्मी
- ✓ राजभाषा – संस्कृत

बस्तर के काकतीय वंश (1324ई. से 1948ई. से 1961ई.)

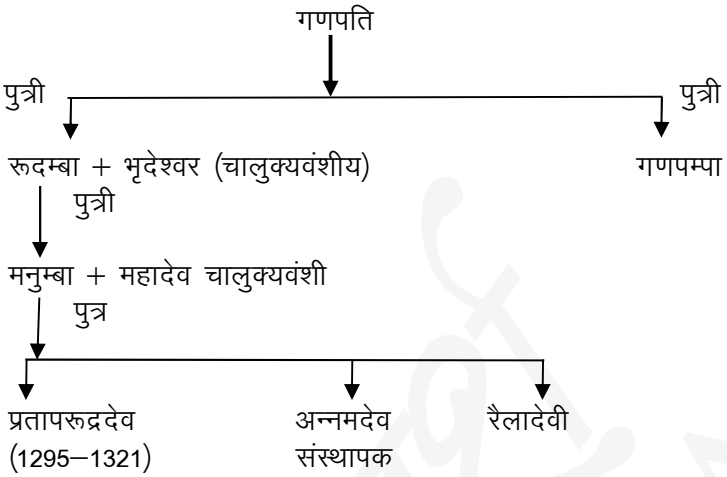

- काकतीय एक दुर्गा का रूप है।
- 1310 ई. में अलाउद्दीन खिलजी के सेनापति मलिक काफूर का आक्रमण हुआ।
- 1320 में तुगलक वंश का पुनः आक्रमण हुआ, प्रतापरूद्रदेव कैद कर लिये गये।
- अन्नमदेव भागते हुए बस्तर आये और काकतीय वंश की नींव रखी।
- नोट :– बस्तर के खूनी इतिहास के लेखक – केदारनाथ ठाकुर

काकतीय वंश की वंशावली		
क्र.	**शासक**	**शासनकाल**
1.	अन्नमदेव	1324–1369 ई.
2.	हमीरदेव	1369–1410 ई.
3.	भैरमदेव	1410–1468 ई.
4.	पुरूषोत्तम देव	1468–1524 ई.
5.	जयसिंह देव	1524–1558 ई.
6.	नरसिंहदेव	1558–1602 ई.
7.	प्रतापराज देव	1602–1625 ई.
8.	जगदीश राज देव	1625–1639 ई.
9.	वीर नारायण सिंह	1639–1654 ई.
10.	बीर सिंह देव	1654–1680 ई.
11.	दीगपाल/दीकपाल	1680–1709 ई.
12.	राजपाल	1709–1721 ई.
13.	चंदेलमामा	1721–1731 ई.
14.	दलपत देव	1731–1774 ई.
15.	अजमेर सिंह	1774–1777 ई.
16.	दरियाण देव	1777–1800 ई.
17.	महिपाल देव	1800–1842 ई.
18.	भूपाल देव	1842–1853 ई.
19.	भैरमदेव	1853–1891 ई.

20.	रूद्रप्रतापदेव	1891–1921 ई.
21.	प्रफुल्ल कुमारी देवी	1921–1936 ई.
22.	प्रवीर चन्द्र भंजदेव	1936–1948–1961 ई.
23.	विजय चन्द्र भंजदेव	1961–1969 ई.
24.	भरतचन्द्र भंजदेव	1969 – 1997 ई.
25.	कमलचंद्र भंजदेव	1997 से वर्तमान तक

➢ अन्नमदेव (1324 से 1369 ई.)

- इस वंश का संस्थापक था।
- छिंदकनागवंशी शासक हरिशचन्द्रदेव को पराजित किया।
- राजधानी :– चक्रकोट से परिवर्तन कर मधोता लेकर आये।
- लोकगीतों में इन्हें चालुक्यवंशी भी कहा जाता है।
- अन्नमदेव को दंतेवाड़ा शिलालेख में अन्नमराज कहा गया है।
- दन्तेवाड़ा के तराला नामक ग्राम में दंतेश्वरी माता मंदिर का निर्माण करवाया।
- अन्नमदेव की रानी का नामक सोनकुंवर चन्देलिन था।
- दंतेवाड़ा अभिलेख प्राप्त हुआ।
  (दंतेश्वरी मंदिर + चालुक्य वंश का उल्लेख किया गया है।)
- अन्नमदेव के बाद बस्तर के राजा अपने आपको चन्द्रवंशी कहने लगे बस्तर के हलबी भतरी मिश्रित लोकगीतों में अन्नमदेवी को चालंकी वंश राजा कहा गया।

➢ हमीरदेव (1369 से 1410 ई.)

- अन्नमदेव के उत्तराधिकारी हमीरदेव को हमीरदेव या एमीराजदेव भी कहा गया है।
- श्याम कुमारी बघेलिन (बघेल राजकुमारी) इनकी राजमहिषी थी।
- उड़ीसा के इतिहास में इनका वर्णन है।

➢ भैरम देव (1853 से 1891 ई.)

- भैरमदेव के अन्य ध्वनिपरिवर्तन नाम भयरजदेव तथा भैरवदेव भी मिलता है।
- इनकी पत्नी का नाम मेघावती या **मेघई अरिचकेलिन** का वर्णन किया गया है, मेधावती आखेट विद्या में निपूर्ण थी।
- आज भी मेघावती के नाम से बस्तर में मेघा साड़ी प्रचलित है।

↓

मेघई गोहड़ी प्रभृति (राकटिका)

➢ पुरूषोत्तमदेव (1468 से 1524 ई.)

- राजधानी – मधोता – बस्तर
- इनकी पत्नी का नाम कंचनकुवरि बघेलिन था।
- उदर के बल लेटतेहुए जगननाथ भगवान के दर्शन के लिए उड़ीसा गए और रत्नाभूषण की भेंट चढ़ाई।
- तत्कालिक उड़ीसा के शासक ने पुरूषेत्तमदेव से प्रसन्न होकर उन्हें 16 पहियों वाला रथ प्रदान किया और उन्हें रथपति की उपाधि दी।
- वहां से वापस आकर उन्होने विशेष पर्व प्रारंभ करवाया।
  - ✓ गोंचा पर्व – आषाढ़ शुक्ल पक्ष द्वितीया (तुपकी चलाने की प्रथा)
  - ✓ बस्तर दशहरा – सावन अमावस्या (75 दिनों तक मनाया जाता है।)
  - ✓ अमूस त्यौहार – सावन अमावस्या
    - ○ यह सभी प्रारंभ करवाया।

➢ जयसिंह देव (1524 से 1558ई.)

- इनकी रानी का नाम चन्द्रकुवंर बघेलिन था।
- राज्याधिरोहण के समय यह 24 वर्ष के थे।

➢ नरसिंह देव (1558 से 1602 ई.)

- नरसिंह देव मात्र 13 वर्ष की आयु में राजा बने।
- सइनकी पत्नी का नाम लक्ष्मीकुंवर बघेलिन था।
- लक्ष्मीकुंवर बघेलिन ने तालाब व बगीचे बनवाए थे।

➢ प्रताप राजदेव (1602 से 1625ई.)

- इस वंश का सबसे प्रतापीराजा हुआ।
- गोलकुण्डा के मोहम्मद कुली कुतुबशाह की सेना ने बस्तर पर आक्रमण किया कुतुबशाह पराजित हुआ।
- डोंगरगढ़ क्षेत्र के 18 गढ़ों पर विजय प्राप्त की।

➢ जगदीश राजदेव (1625 से 1639 ई.)

- कुली कुतुबशाह के पुत्र अब्दुल्ला कुतुबशाह के आक्रमण से अपने क्षेत्र की रक्षा की।
- मुगलों के पांव कभी भी इस क्षेत्र में न जम पाये।

➢ वीर सिंह देव (1654 से 1680ई.)

- इनके कार्यकाल में राजपुर (कोंडागांव) का दुर्ग किला बनवाया।
- इन्होने अपनी राजधानी राजपुर बनाई।
- 16 पहियों के स्थान पर 4 पहियों व 8 पहियों वाले रथ बनवाए।
- इनकी पत्नी का नाम बदनकुंवर चंदेलिन था।

➢ राजपाल (1709 से 1721ई.)

- राजपालदेव को राजप्रासादीय पत्रों में रक्षपाल देवी भी कहा जाता है। इनका एक ताम्रपत्र महंत घासीदास स्मारक संग्रहालय में रखा गया है। जिसमें वर्णन है कि –
  1. इसमें छत्तीसगढ़ी शब्द का प्रयोग हुआ है।
  2. प्रौढ़प्रताप चक्रवर्ती की उपाधि धारण किया।
  3. मणिकेश्वरी देवी के उपासक थे।

➢ चंदेल मामा (1721 से 1731 ई.)

बघेलिन + राजपाल + चंदेलिन → (भाई) चंदेल
↓ मामा
दलपत देव

राजपाल की दो पत्नी बघेलिन व चंदेलिन थे।

↓ पुत्र ↓ पुत्र
दखिनसिंह दलपतदेव, प्रतापदेव

- राजपाल की आकस्मिक मृत्यु के पश्चात उनकी पहली पत्नी चंदेलिन का पुत्र दलपत देव था, जो छोटा था इस कारण इनके माम चंदेल ने 10 वर्षो तक शासन किया।
- दलपत देव रक्षा बंधन के शुभ मुहुर्त पर राखी का नेग लेकर चंदेल राजा के दरबार में हाजिर हुआ और उसका वध कर डाला।

➢ दलपत देव (1777 से 1800ई.)

- दलपत देव के शासनकाल में छ.ग. मराठा भोसलों के अधीन आ गया।
- 1770 ई. में नागपुर के मराठा सेनापति नीलूपंत का बस्तर में आक्रमण हुआ, जिसमें नीलूपंत पराजित हुआ।
- दलपत ने राजधानी बस्तर से परिवर्तित कर जगदलपुर कर दिया।
- इनके समय में वस्तुविनिमय प्रणाली (वस्तु के बदले) की शुरूवात हुई।

➢ अजमेर सिंह (1774 से 1777ई.)

- अजमेर सिंह व उनके भाई दरियादेव के बीच **1774** से लेकर **1777** तक हल्बा विद्रोह (बस्तर का पहला जनजाति विद्रोह) हुआ।
- 1774 ई. में दरियादेव ने जैपुर के राजा विक्रमदेव व मराठासेनापति अवीरराव के साथ मिलकर अजमेर सिंह के खिलाफ युद्ध छेड़ा। अजमेर सिंह पराजित हुए। युद्ध के दौरान मारा गया।
- अजमेर सिंह को **क्रान्ति का मसीहा** कहा जाता है।
- ये डोंगर क्षेत्र के प्रशासक थे।

➢ दरियाव देव (1777 से 1800ई.)

- अजमेर सिंह के विरूद्ध षडयंत्र कर मराठों की सहायता की 6 अप्रैल 1778 को कोटपाट की संधि हुई।

बस्तर के राजा — राजा दरियादेव
+
जैपुर के राजा — विक्रमदेव
+
मराठासेनापति — अवीरराव

- दरियादेव मराठा के अधीन शासन करने वाला पहला राजा हुआ।
- 1795 ई. में भोपालपट्टनम संघर्ष हुआ।
- **कारण** –
  1. यूरोपीय यात्री कैप्टन ब्लंट बस्तर की यात्रा पर आये थे।
  2. कै. ब्लंट बस्तर प्रवेश नही कर पाये पात्र कांकेर के सीमावर्ती क्षेत्रों की यात्रा किये अप्रत्यक्ष रूप से बस्तर इसी समय पहली बार छत्तीसगढ़ का अंग बना।

➢ महिपाल देव (1800 से 1842 ई.)

- महिलादेव ने मराठों को टकोली देना बंद कर दिया जिसके कारण मराठा सेनापति रामचन्द्रबाघ का 1809 ई. में बस्तर क्षेत्र में आक्रमण हुआ।
- महिपालदेव ने 10 वर्षो का टकोलीकर देना स्वीकार किया। छ.ग. के अंग्रेजों के अधीन संरक्षणाधिकारी काल में महिपाल बत्तर का राजा हुआ।
- 1830 में पुनः मराठा आक्रमण हुआ आक्रमण के दौरान महिपाल देव ने सिहावा परगना मराठा को दे दिया।
- मराठों व ब्रिटिश सत्ता के मध्य 1818 ई. में आंग्ल मराठा संधि हुए।
- इस समय परलकोट विद्रोह (1824–25 ई.) में हुआ।

➢ भूपाल देव (1842 से 1858 ई.)

- भूपालदेव के भाई दलगंजनसिंह के साथ तारापुर विद्रोह हुआ।
- इन्ही के कार्यकाल में मेरिया विद्रोह हुआ यह विद्रोह दंतेश्वरी मंदिर में नरबलि प्रथा पर रोक लगाने के कारण हुआ।

➢ भैरमदेव (1853 से 1891 ई.)

- भैरमदेव के कार्यकाल में छत्तीसगढ़ पूर्णतः अंग्रेजों के अधीन आ गया।
- छ.ग. संभाग का डिप्टी कमिश्नर मेजर चार्ल्स इलियट प्रथम यूरोपीय था, जो 1856 ई. बस्तर आया था।
- चार्ल्स इलियट ने इस क्षेत्र से सम्बंद्ध मूल्यवान सामग्री जुटाई थी, इनके द्वारा संचित सामाग्री जगदलपुर के जिलाधीश कार्यालय में हस्तलिखित रूप से विद्यमान है।
- अंग्रेजो के अधीन प्रथम शासक जिन्होने बस्तर में प्राथमिक शिक्षा के लिए स्कूल खोले।
- भैरमदेव के शासनकाल में विद्रोह :–
  1. लिंगागिरि विद्रोह (1856 ई.)
  2. कोई विद्रोह (1859 ई)
  3. मुरिया विद्रोह (1876 ई.)

➢ रानी चेरिस जुगराम कुंवर (1878 से 1886 ई.)

- इनका वास्तविक नाम जुगराज कुंवर था।
- भैरमदेव की पत्नी थी, जिन्होने सत्ता को लेकर राजा के खिलाफ विद्रोह छेड़ दिया।
- इनके दरबार में कालेन्द्र सिंह थे।
- छत्तीसगढ़ की पहली विद्रोहणी थी।

➢ रूद्रप्रताप देव (1891 से 1921ई.)

- भैरमदेव की मृत्यु 28 जुलाई 1891 में हुई उस समय रूद्रप्रतापदेव 6 वर्ष के थे।
- ब्रिटिश शासन ने रूद्रप्रतापदेव को उत्तराधिकारी स्वीकार कर लिया था। तथा उनकी अल्पवयस्कता में नवम्बर **1891–1908** तक बस्तर का शासन अंग्रेज प्रशासकों के ही अधिकार में था।
- इन्होनें राजकुमार कॉलेज से पढ़ाई की।
- 1908 ई. में इनका राज्यअभिषेक हुआ।
- यूरोपीय युद्ध में अंग्रेजों का साथ देने के कारण **सेंट ऑफ जेरूसलम** (ईसामसीह) की उपाधि दी गयी। (प्रथम विश्वयुद्ध में अंग्रेजों का साथ देने के कारण यह उपाधि इनको दी गई।)
- इनके समय बस्तर में अनेक विकास कार्य किए गए जैसे –
  1. इन्होनें जगदलपुर में रूद्रप्रताप पुस्तकालय की स्थापना की।
  2. जगदलपुर को चौराहों का नगर बसाया (1772 ई.)
  3. बस्तर में सड़के बनवायी।
- रूद्रप्रताप देव के शासनकाल में सबसे बड़ा जनजाति विद्रोह भूमकाल विद्रोह 1910 में हुआ।
- इसके समय में छैटी–पौनी प्रथा प्रचालित थी, यह स्त्रियों के क्रय विक्रय से संबंधित प्रथा थी इनकी एक मात्र पुत्री प्रफ्फुल कुमारी देवी थी।

➢ प्रफुल्ल कुमारी देवी (1921 से 1936 ई.)

- प्रफुल्ल कुमारी देवी का राज्याभिषेक 1922 में 12 वर्ष की आयु में हुआ था।
- इनका विवाह मयूर भंज महाराज के भतीजे प्रकुल्ल चन्द्र भंजदेव के साथ **जनवरी 1927** को हुआ।
- **द इण्डिन वूमन हुड** नामक एक पत्रिका में महारानी के विषय में उल्लेख है।
- अपने पूरे कार्यकाल के दौरान अंग्रेजों से मतभेद चलते रहे।
- 1936 में अपेंडीसायटिस नामक रोग से ग्रसित होने के कारण इनका निधन इंग्लैण्ड में ही होगया।
- प्रफुल्ल कुमारी देवी छत्तीसगढ़ की एकमात्र महिला शासिका थी।
- 1925 में विवाह प्रफुल्ल कुमारी + प्रफुल्लचन्द्र भंजदेव

  प्रवीरचन्द्र भंजदेव

➢ प्रवीर चन्द्र भजदेव (1936 से 1948 से 1961 ई.)

- काकतीय वंश के अंतिम शासक हुये।
- छत्तीसगढ़ के सबसे कम उम्र के विधायक थे।
- इन्होने विलय पत्र पर हस्ताक्षर किया।
- छ.ग. शासन द्वारा इनकी स्मृति में तींरदानी के क्षेत्र में पुरस्कार दिया जाता है।
- **इनके द्वारा लिखित पुस्तक** :–
  1. I प्रवीर the आदिवासी God
  2. लोहाण्डीगुड़ा तरंगिनी।